एम० ए० एच सेमेस्टर
हिन्दी आलोचना
इकाई - 4

'कामायनी : एक पुनर्विचार' गजानन माधव मुक्तिबोध की व्यावहारिक समीक्षा संबंधी पुस्तक है। इसका पुस्तकाकार प्रकाशन 1961 में हुआ था। इस विषय पर 'कामायनी : कुछ नए विचार' शीर्षक से दो लेख इंस के नवम्बर 1945 एवं फरवरी, 1946 अंकों में आ चुके थे। मुक्तिबोध के लिए 'कामायनी' एक चुनौतीपूर्ण रचना थी। वस्तुत: यह चुनौती सभी प्रगतिशील आलोचकों के सामने थी। इसका एक कारण 'कामायनी' की भव्यता और प्रभावशीलता थी। 'कविता समाज निरपेक्ष या शाश्वत नहीं होती, बल्कि उसका गहरा सम्बन्ध अपने युग के समाज और समाज की समस्याओं से होता है। आलोचना की इस धारणा के सामने 'कामायनी' समस्या खड़ी कर देती थी। इसमें व्यक्त वस्तु-तत्व की समाज सापेक्ष व्याख्या कैसे की जाए?' इस चुनौती को मुक्तिबोध ने स्वीकार किया और उसका गहन अध्ययन अनुशीलन कर समाज सापेक्ष व्याख्या प्रस्तुत की।

मुक्तिबोध के अनुसार - 'कामायनी की प्रमुख समस्या मनु का चरित्र-चित्रण है। वह

Scanned with CamScanner

मनु कौन है? वे मानते हैं कामायनी का मनु वेद-कालीन मनु नहीं है, यह मनु 'मन' का अथवा मानव-मन मात्र का प्रतिनिधि भी नहीं है। भले ही स्वयं प्रसाद जी ने उसे इस रूप में प्रस्तुत किया है। वह लिखते हैं- 'मान लीजिए मनु, मनु नहीं, सूबेदार है या मन्नालाल! स्वस्थ शिक्षित, तरुण। श्रद्धा और इड़ा के नाम पर कोई दूसरे आधुनिक नाम रख लीजिए। मुख्य बातों को रख करके तथा इन नामों को वही चरित्र प्रदान करके कहानी बढ़ाइये। मालूम होगा कि कहानी सर्वथा आधुनिक है तथा ऐसे चरित्र सुप्राप्य हैं।'[2] मनु की ट्रेजिडी बहुत जगह मिल जाएगी साथ ही श्रद्धा के समान शील-संतोषमयी गृहिणी से असन्तोष और नूतन गतिमान निर्माण-शीला व्यक्तित्व की नारी से सहचर्य भावना भी। इस तरह मनु को वह वेदकालीन नहीं मानते।

मुक्तिबोध के अनुसार- 'मनु एक टाइप है, उस वर्ग का टाइप, जिसकी शासन सत्ता तथा ऐश्वर्य छिन गया है। उस वर्ग की समस्त प्रवृत्तियाँ मनु में है।... वस्तुतः मनु की प्रकृति ठीक उस पूंजीवादी व्यक्तिवाद की प्रकृति है जिसने कभी जनतन्त्रवाद का बढ़ाना भी नहीं किया केवल अपने

Scanned with CamScanner

मानसिक खेद, अन्तर्विप्लव और निराशा से छुटकारा पाने तथा स्वस्थ-शान्त अनुभव करने के लिए, श्रद्धा और इड़ा के समान अच्छी साथिनों का सहारा लिया,' जो उसके सौभाग्य से उसे प्राप्त भी हुआ। मुक्तिबोध मनु को आधुनिक पूँजीवाद का पुत्र न मानकर 'सामंत व्यवस्था के शासक वर्ग' का पुत्र मानते हैं। 'तानाशाही प्रवृत्ति' उसके खून में है।

मुक्तिबोध के अनुसार 'कामायनी' में मनु ने तीन महान अपराध किए हैं- श्रद्धा परित्याग, इड़ा-घर्षण-प्रयत्न और अपनी प्रजा से युद्ध। पहला अपराध व्यक्तिगत है, जबकि दूसरा और तीसरा अपराध राजनैतिक-सामाजिक है। वस्तुतः 'मनु को श्रद्धा परित्याग का दुख है, न इड़ा पर स्वयंकृत शारीरिक आक्रमण का, न अपने द्वारा की गई जनहत्या का।

श्रद्धा को वह सीमित व्यक्तित्व की स्वामिनी के रूप में देखते हैं उसमें ज्ञान, क्रिया तथा इच्छा के सामंजस्य और सन्तुलन का सर्वथा 'अभाव है। उनके अनुसार इड़ा 'पूँजीवादी समाज की मूल विचारधारा की प्रतीक' है। उसमें बुद्धितत्व प्रमुख अवश्य है। 'जीवन के लिए संघर्ष' तथा योग्यतम की विजय' उसके प्रमुख सिद्धान्त हैं। वह नियमों के अनुसार कार्य करने में विश्वास रखती है।

'मुक्तिबोध प्रसाद की क्षमता और महत्व

Scanned with CamScanner

इसलिए नहीं स्वीकार करते कि उन्होंने मनु को देशकालातीत, शाश्वत मानव का रूप दिया है बल्कि इसलिए कि उन्होंने 'पूँजीवादी ह्रासग्रस्त समय' के भीतर व्यक्ति के भीतरी विकेन्द्रीकरण का प्रश्न बड़े जोर से उठाया।' 'कामायनी' मुक्तिबोध की दृष्टि में द्विअर्थक रूपक कथा न होकर पैंटेसी है। उन्होंने 'कामायनी' की रचना प्रक्रिया को एक विराट पैंटेसी के रूप में ही देखा-परखा है।

निर्मला जैन के अनुसार -"'कामायनी' की, वर्ग-दर्शन पर आधारित विस्तृत पुनर्व्याख्या करके मुक्तिबोध ने आलोचक रूप में अपनी मार्क्सवादी दृष्टि का प्रमाण प्रस्तुत किया। परन्तु इसके साथ उनके आलोचक का एक पहलू वह भी है जिसमें एक जागरूक रचनाकार के नाते वे अपनी रचना-प्रक्रिया के निर्मम साक्षी प्रतीत होते हैं।"

संदर्भ ग्रन्थ -

1. हिन्दी आलोचना का दूसरा पाठ, निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन 2018
2. समकालीन हिन्दी आलोचक और आलोचना, डा० रामबक्ष, हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण 1991